बिन्दु स्वरूप स्थिति में जो सुख है, वो किसी और में नहीं

- गतांक से आगे...

कहते हैं ना कि आत्मा का सत्य स्वरूप कौन सा है? सत चित आनन्द स्वरूप। तो परमात्मा का भी सत्य स्वरूप है सत चित आनन्द स्वरूप।

सत चित आनन्द का पहला भाव कि हमारा चित्त भी आनन्द स्वरूप हो जाता है। दूसरा हमारी चैतन्यता। आत्मा चैतन्य है और शरीर जड़ है। आत्मा चैतन्य है, उस चैतन्यता की अभिव्यक्ति आनन्द से ही होती है। आज मनुष्य जीवन में जब आनन्द नहीं है, तो जब आनन्द ही नहीं है तो क्या कहते हैं? ज़िन्दा लाश है। ज़िन्दा लाश कहते हैं ना, क्योंकि आनन्द की अभिव्यक्ति ही नहीं हो रही है। जीवन में खुशी ही नहीं है। जब खुशी ही नहीं है तो आनन्द कहाँ से होगा! क्योंकि खुशी फर्स्ट स्टेप है और आनन्द लास्ट स्टेप है। इसीलिए कई ऋषि मुनियों ने भी उस आनन्द का, परमानन्द का अनुभव करना चाहा। लेकिन वो परमानन्द की स्थिति का अनुभव जब ये माइट स्वरूप हो, तब उस माइट स्वरूप में महसूस होगा कि सर्वशक्तियों की किरणें जैसे बाहें बनकर जब हमें अपने अन्दर समा लेती हैं तो उस समय आत्मा कितनी आनन्दित हो जाती है। क्योंकि उसको जैसे सबकुछ प्राप्त हो गया, अब ये दुनिया की कोई भी चीज़ हमारे मन बुद्धि को अपनी तरफ खींच नहीं सकती। और वो आनन्द का अनुभव इतना अलौकिक अतीन्द्रिय सुख का, माना इन इन्द्रियों से परे के सुख का अनुभव कराने वाला है। जो बहुत ऊंची स्थिति है। इसीलिए बिन्दु स्वरूप स्थिति में हर कोई जाना चाहता है, उसका अनुभव करना चाहता है। क्योंकि उसमें जो सुख, जो आनन्द है वो और किसी अवस्था में नहीं मिलता है। इसीलिए इस अवस्था में हम समाना चाहते हैं, खोना चाहते हैं।

और तीसरा स्वरूप है परमधाम का, परमधाम के अन्दर उल्टा वृक्ष है। परमधाम में हमेशा आपने देखा होगा उल्टा वृक्ष है। पूरा आत्माओं का वृक्ष है, इसीलिए बाबा कहते हैं कि जैसे-जैसे आत्मायें आती जायेंगी, तो अपनी-अपनी स्टेज अनुसार उस स्थान पर चली जायेंगी जितने लेवल की प्यूरिटी उसमें है, उस अनुसार सारी पवित्र आत्मायें। लेकिन प्यूरिटी में भी थोड़ा मार्जिन, हरेक में इतना अंतर होगा। तो इसीलिए वो उस अनुसार उस स्टेज पर या उस स्थान पर जाकर बैठ जायेगी। जो सतयुग की सम्पूर्ण पवित्र आत्मायें हैं, वो वहाँ चली जायेंगी तो उल्टा वृक्ष का बीज परमात्मा है। परमात्मा ऊपर है उसके बाद ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीन

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

आत्मायें हैं। वो तीन भी आत्मायें एक ही हैं लेकिन पार्ट तीन हैं। और उसके बाद लक्ष्मी नारायण और लक्ष्मी नारायण के बाद अष्ट रत्न, इस तरह से पूरा थुर बनने लगता है। तो उस वक्त अपने आपको भी बीज रूप परमात्मा के सामने देखना। और जब बीज रूप परमात्मा के संग में बैठी हूँ तो मैं भी बीज हूँ। बीज माना जिसके अन्दर सारे वृक्ष को समाने की शक्ति है। जिसके अन्दर सारा समाया हुआ है तो जिस तरह परमात्मा के अन्दर सारे वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समाया हुआ है, ऐसे ही हम भी बीज हैं लेकिन मैं बीज कैसी हूँ। कि जिसके अन्दर सतयुग से लेकर कलियुग तक का, 84 जन्मों का पार्ट समाया हुआ है। मर्ज होता है, माना पूरा वृक्ष का आदि से लेकर अंत तक का पार्ट जिसमें समाया हुआ है वो मैं आत्मा हूँ। और इसलिए जब मैं वो आत्मा हूँ तो सतयुग में जब हम आते हैं तो अलग आत्माओं के संग पार्ट बजाते हैं, त्रेता में अलग आत्मायें हमारे संग पार्ट बजायेंगी। द्वापर में भी कुछ और आत्मायें हमारे संग पार्ट बजायेंगी। कलियुग में भी और आत्मायें हैं बहुत सारी। जो सतयुग त्रेता में भी नहीं आने वाली लेकिन उनके संग भी मेरा पार्ट तो है ना! पार्ट तो है या नहीं? तो जब मेरा पार्ट आदि-मध्य-अंत का सारे कल्प वृक्ष के अन्दर सभी आत्माओं के साथ, माना मैजोरिटी आत्माओं के साथ, किसी के साथ नज़दीक का, किसी के साथ दूर का, किसी के साथ कैसा, पार्ट तो होगा ना! एक शहर में भी बस रहे हैं तो उन शहरों की आत्माओं से भी पार्ट है हमारा कुछ न कुछ, तभी उस शहर के वासी बने हैं। कुछ तो होगा ना! किसी को एक बार भी देख लिया तो जो आमने-सामने दृष्टि का जो आदान-प्रदान हुआ तो दृष्टि का आदान-प्रदान भी, उतना तो लेन-देन हो गया ना! तो इसीलिए उन सब आत्माओं के साथ भी मेरा कनेक्शन है तो बीज रूप परमात्मा के संग बैठ करके फिर परमात्मा से वो सकाश लेकर उन सभी आत्मायें जो बीज रूप में बैठी हैं वहाँ, उन सभी आत्माओं तक माना पत्ते-पत्ते तक मुझे वो साकाश पहुंचानी है।

ख्यालों के आईने में...

फतेहपुर-उ.प्र.। नवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी में डी.एम. अंजनेय कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीरू।

रावतसर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के सिल्वर जुबली कार्यक्रम में मंचासीन हैं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु.ऊषा,माउंट आबू, ब्र.कु. शांता,अजमेर, ब्र.कु. कमल,क्षेत्रीय निदेशिका,बीकानेर, ब्र.कु. बालू तथा अन्य। कार्यक्रम में शरीक हुए एस.डी.एम. अवि गर्ग, मजिस्ट्रेट श्याम सुन्दर विसगोई, तहसीलदार कस्तुरीलाल, म्युनिसिपैलिटी के उपाध्यक्ष कृष्ण लाल शर्मा, पंचायत समिति के सदस्य धूलिचंद अथवाल, ब्र.कु. नितिन, ब्र.कु. भानू तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलिमा।

कुछ चीज़ें समीप जाने पर बगैर मांगे मिल जाती हैं जैसे - बर्फ के पास शीतलता, अग्नि के पास गर्माहट और गुलाब के पास सुगंध, फिर भगवान से मांगने के बजाय निकटता बनाइये, सबकुछ अपने आप मिलना शुरू हो जायेगा।

आगे बढ़ने वाला व्यक्ति कभी किसी को बाधा नहीं पहुंचाता और दूसरों को बाधा पहुंचाने वाला व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ता।

ओमशान्ति मीडिया का मोबाइल एप्प गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। आप क्यू.आर. कोड स्कैन करके डाउनलोड करें एवं लाभ उठायें।

Available on the Android App Store

https://play.google.com/store/apps/details?id=app.bk.osm.OmShantiMedia

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।